क्या है रेव पार्टी?

उसका सही जबाव होगा- एसिड, इक्सटैसी (ये ड्रग्स के नाम हैं) पीएँगे, रात भर ट्रांस म्यूजिक पर नाचेंगे, 'हट' में सेक्स करेंगे लेकिन रेव पार्टी साधारण लोगो के लिए कतई नहीं है, हालाँकि खंडाला भी रेव पार्टियों का स्वर्ग माना जाता है। रेवियों का अंदाज छिछोरों जैसा नहीं होता। यह केवल धनकुबेरों के बिगडेल बेटों के लिए है।

एक रेविया बड़ा शातिर होता है। पार्टी के बारे में वे बाहरी के व्यक्तियों को जरा भी भनक नहीं लगने देते। एसएमएस से भेजते हैं पार्टी का न्योता। यह तो रेव पार्टी के नौसिखिए हैं जो काम बिगाड़ते हैं और कभी-कभी मस्ती में पुलिस का खलल पड़ जाता है।

मुंबई, खंडाला, पुणे, पुष्कर से अब रेव पार्टियाँ मनाली तक पहुँच गई हैं, लेकिन नशे के घालमेल ने रेव पार्टी का उसूल बदल दिया है। पहले यह खुले तौर पर होती थी अब चोरी छिपे होने लगी है। ड्रग बेचने वालों के लिए ये रेव पार्टियाँ व्यवसाय की सबसे मुनाफे की जगह बन गई हैं। पुलिस की अधिक सख्ती की वजह से महानगरों की रेव पार्टियों के मतवालों को दूर जाकर अपना यह शौक पूरा करना पड़ रहा है।

पिछले कुछ समय पूर्व मुंबई में छापे के बाद पूरे देश की रेव बिरादरियों के बीच मानो रेड अलर्ट-सा जारी हो गया है। इन पार्टियों में ट्रांस म्यूजिक बजाने वाले महानगर के डीजे ने जैसे अपने होंठ सी लिए हैं। अधिकतर डीजे रेव के बारे में ऐसे बात कर रहे हैं जैसे बहुत सीधे साधे हों। लेकिन सही बात यह है कि उन्हें रेव का में होने वाले अंदर की बातों का सब पता है। महानागर के लगभग सभी डीजे इन रेव पार्टियों की वजह से करोडपति हो रहे हैं। महरौली व गुड़गाँव के एकांत फार्म हाउस में ये डीजे ही उनकी नाइट लाइफ को रंगीन बनाते हैं।

दिल्ली के रेविए इसराइल, ईरान और फ्रांस की फिरंगी सर्किट में अधिक जाते हैं। इन पार्टियों में अकसर जाने वाले मनु कहते हैं- रेव अब धंधा नहीं रहा। अब यह सिर्फ करीबी दोस्तों के बीच का शगल रह गया है। वे आपसे में पैसे जमा करते हैं फिर मस्ती करते हैं। पिछले कुछ समय पूर्व मुंबई में हुई गिरफ्तारी के बाद तो रेव पार्टियों में नए सदस्यों का आना एकदम बंद है। ये नए लोग ही खेल बिगाडते हैं। अपनी शान बघारने के लिए किसी को बता देते हैं। उसने बताया- इन पार्टियों में मॉडल, सेलिब्रिटी, एवं राजनेताओं के बच्चे जाते हैं।

मॉडल तो इन पार्टियों में अकसर देखी जाती हैं । इन रेव पार्टीयों में लड़कों के तुलना में लड़कियों की संख्या में कमी होने का रोना रोते हों लेकिन इन रेव पार्टियों के मामले में लड़कियों ने लड़कों को काफी पीछे छोड़ दिया है। सौ रेवियों में लड़कियों की संख्या 70 होती ही है। एक समय राहुल महाजन, फरदीन खान आदि सेलिब्रिटी के भी इन पार्टियों की गिरफ्त में आने की बातें उठी थीं। मुंबई के छापे में गिरफ्तार रेवियों में अभिनेता शक्ति कपूर का बेटा भी शामिल रहा है। दिल्ली के पासे के इलाकों की युवकों की रेव पार्टियों में धनकुबेरों व उद्यमियों के बेटे भी जाते हैं। एयरहोस्टेस एव सीग्रेड की अभिनेत्री भी अकसर देखी जाती हैं।

महानगरों के युवकों का रेव के प्रति उत्साह बढ़ता ही जा रहा है। अब रेव का मतलब डांस में डोपिंग यानी नशे का सेवन और सेक्स होता जा रहा है । डीजे का कहना है कि बिना ड्रग लिए वे लगातार 8 घंटे साइकेडेलिक ट्रांस म्यूजिक पर थिरक ही नहीं सकते। कुछ तो है कि जो उनमें लगातार नाचने का जुनून पैदा करते हैं। जिनके पास पैसे होते हैं वे एसिड व इक्सटेसी जैसे महँगे ड्रग लेते हैं। जिनके पास उतना पैसा नहीं होता, जिन्हें अपनी बजट भी देखनी होती है वे वे श्रूम्स (मशरूम), हशीश या गाँजा से ही काम चला लेते हैं।

डीजे बताया अगर कोई लड़का लगातार डांस करता दिखे तो समझ जाइए वह इक्सटेसी पर है । रेव पार्टियों में 20 हजार, 30 हजार या 60 हजार वाट का म्यूजिक भी बजता है, जिससे शोर बहुत अधिक होता है। सिर्फ ड्रग का सवाल नहीं है। इसमें जाने की कीमत दोगुनी होती है। सेक्स को लेकर जो बातें कही जाती हैं उसमें उतनी सच्चाई न भी हो, किस इज क्राइट कूल। हाँ, कुछ विदेशी जरूर बेहयाई पर उतर जाते हैं।

लेकिन रेव पार्टी में जाने वाले डीजे नासिर कहते हैं- नाचते हुए इश्क ने जोर मारा तो कई रेव पार्टियों में उसकी व्यवस्था भी रहती है। रेव वेन्यू पर उसके लिए हट बनने लगे हैं। स्वैपिंग इज ऑलसो कूल। इसमें भाग लेने वाले बिंदास युवकों के लिए सेक्स और प्यार की नैतिकता कोई मायने नहीं रखती।

सब कुछ दाँव पर लगा सकती हैं लड़कियाँ -बिना किसी रंग, स्वाद व गंध की रेप डेट ड्रग के नाम से कुख्यात इस दवा की चपेट में आकर रेव पार्टियों में जाने वाली नई लड़कियाँ अपना सब कुछ गँवा सकती हैं। हार्ट केयर फाउंडेशन के अध्यक्ष और नशे की लत छोड़ने के लिए युवकों को मशवरा देने वाले डॉ. केके अग्रवाल कहते हैं कि दूध, चाय या पानी के साथ मिलाकर कोई यह दवा पिला दे तो कुछ पता नहीं चलता। इस दवा का असर यह होता है कि उनके साथ कुछ भी हो, लड़कियों को यह खुशफहमी होती रहती है कि वे डेट पर हैं, बस। होश में आने पर उन्हें कुछ याद नहीं रहता कि उनके साथ क्या-क्या हुआ?

मुंबई के करजत इलाके में कुछ समय पहले रात रेव पार्टी में हाई प्रोफाइल युवक-युवतियों के बीच ड्रग्स की सप्लाई का भंडाफोड़ हुआ। इसमें एक नार्कोटिक्स इंस्पेक्टर समेत करीब 350 युवक-युवतियां पकडे गये। खबर आते ही हमें अखबारों के वो क्लासीफाइड विज्ञापन याद आ गये जिनमें खुलेआम ऐसी रेव पार्टियों के लिए युवाओं को प्रलोभन दिया जाता है। असल में यहीं से अय्याशी के इस फुल पैकेज को तैयार किया जाता है।

आखिर ये कौन से विज्ञापन हैं? विज्ञापन हैं- जिंदगी की मौज मस्ती और फुल सैटिस्फैक्शन के लिए हमारे साथ जुड़ें और 20 हजार रुपए महीना कमाएं। संपर्क करें- एक्स फ्रेंडशिप क्लब.....। फ्रेंडाशिप करें, डे एण्ड नाइट डेटिंग पर जाएं और महीने में 30 हजार से ज्यादा कमाएं। संपर्क करें.....। दरअसल ये विज्ञापन हैं उन फ्रेंडशिप क्लबों के जो पैसे का लालच देकर युवाओं को सीधे ड्रग्स और देह व्यापार की ओर खींच रहे हैं। इसे हम कमर्शियल सेक्स वर्कर्स या ड्रग्स सप्लायर्स भी कह सकते हैं।

पुलिस के सूत्रों की माने तो ये क्लब वही हैं, जो रोजाना अपने यहां रेव पार्टियों में युवक-युवतियों की भीड़ जुटाने के लिए ऐसा करते हैं। पश्चिमी देशों से जब रेव पार्टियों का कल्चर भारत आया तो इसमें सिर्फ अमीर घरानों के लोग जाते थे। वो भी सिर्फ मौज मस्ती और खाली समय का आंनद करने के लिए। समय बीतने के साथ-साथ इन पार्टियों के अंदर मौज मस्ती की परिभाषा भी बदल गई। मुंबई, चंडीगढ़, दिल्ली, बेंगलुरू, मैंगलुरू, आदि बड़े शहरों में आए दिन रेव पार्टियों के पीछे चल रहे देह व्यापार और ड्रग्स के धंधे के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं, लेकिन हर बार युवक-युवतियां ही पुलिस के शिकंजे में आते हैं। न कि वो जो इस धंधे को चला रहा है।

मध्यमवर्गीय परिवारों की लड़के-लड़कियों पर चढ़ा शौक-मुंबई और लोनावला के बीच स्थित करजत के पब में नशे की पार्टी में पुलिस ने छापा मारा और 350 लोगों को हिरासत में लिया। सभी के ब्लड सैंपल भी लिये गये। साथ ही पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया। इससे पहले भी मुंबई में कई रेव पार्टियों में छापे के दौरान हर बार 200 से 300 युवक-युवतियों के ब्लड सैंपल लिये जा चुके हैं। वहीं चंडीगढ़ में होटल के अंदर पार्टी और पार्टी के दौरान अश्लील डांस। हाल ही में अहमदाबाद के आउटस्कर्ट्स में जंगल में मंगल नाम की रेव पार्टी में भारी मात्रा में ड्रग्स व कॉलगर्ल्स बरामद हुईं। इन सभी पार्टियों में अर्धनग्न अवस्था में लड़कियों को नाचते हुए पुलिस ने पकड़ा। हर बार युवक-युवतियां नशे की हालत में मिले जिन्हें होश ही नहीं था।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इन पार्टियों में अब करोडपतियों की बिगड़ैल औलादें ही नहीं बल्कि साधारण परिवारों के वो लड़के-लड़कियां भी जाने लगी हैं, जिन्हें घर से या तो खर्चा नहीं मिलता और या फिर उनके खर्च स्टेटस से कहीं ज्यादा हैं। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हीं विज्ञापनों का सहारा ले रहे हैं, जो मौज मस्ती के बदले पैसा देने को तैयार हैं। यही नहीं अपने घरों से दूर रहकर पढ़ रहे छात्र-छात्राएं भी इन क्लाबों का शिकार बन रहे हैं। आप अगर एक बार इस माया जाल में फंस गए तो निकलना काफी मुश्किल होता है।

असल में सेक्स और नशा ये दोनों ही युवाओं को तेजी से जकड़ रहे हैं। इसी के ही परिणाम है कि रेव पार्टियों के बहाने बलात्कार की वारदातें बढ़ी हैं। इसके अलावा रात्रि में लड़कियों के घर से बाहर रहने के चलन ने भी बलात्कार की घटनाओं में इजाफा किया है। घूम-फिर कर बात युवा पीढ़ी के भविष्य पर आकर टिक जाती है, क्योंकि ये ऐसे क्लब सेक्स और मनोरंजन के साथ आय का साधन भी मुहैया करा रहे हैं।

अब बात आती है इन शहरो में फ्रेंडशिप क्लबों की तो पिछले पांच साल में ऐसे क्लब यहां भी सक्रिय हो गए हैं। वो पूरी योजना के साथ। लखनऊ के कई इलाकों में ऐसे फ्रेंडशिप क्लब अभी भी चल रहे हैं। लेकिन फिलहाल ये क्लब रेव पार्टियों तक नहीं पहुंचे हैं। हां यह जरूर है कि बड़ी संख्या में युवा इन क्लबों से जुड़ रहे हैं।

इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी के श्रीजय नारायण पीजी कॉलेज लखनफ केंद्र के काउंसलर डा. आलोक चांटिया का कहना है कि रेव पार्टियों के पीछे देहव्यापार करने वाले लोग कानून की पहुंच से इसलिए दूर हैं, क्योंकि हमारे संविधान में हर व्यक्ति को संस्था या संगठन बनाने का अधिकार है। अब यदि कोई संस्था अखबारों के माध्यम से फ्रेंडशिप के नाम पर आमंत्रण दे रही है तो वो सीधे तौर पर कामर्शियल प्रॉस्टीट्यूट को बढ़ावा देने जैसा है। देखा जाए तो ऐसे विज्ञापन छापने से पहले अखबारों को भी सोचना चाहिए, क्योंकि अखबार समाज को दिशा दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन अब समाचार पत्र भी व्यवसायिक हो चुके है उन्हें केवल अपना व्यवसाय चलाने में और अपना हित देखने की पडी है।

रेव पार्टियों के पीछे देह व्यापार की बात करें तो यहां पर 'मनी, सेक्स एण्ड प्रोटेक्शन' ये तीनों महत्वपूर्ण हैं। मनी यानी पैसा। पिछले एक दशक में युवाओं में कम उम्र में ही पैसा कमान की ललक बढ़ी है। इसलिए ऐसे विज्ञापन 15 से 20 वर्ष की आयु के लोगों को आसानी से धन कमाने के लिए आकर्षित कर सकते हैं। सेक्स, यह विषय हमेशा से गुप्त रहा है, लेकिन पाश्चात्य संस्कृति के समावेश ने इसकी परिभाषा बदल दी। अब केवल युवक ही नहीं युवतियां भी शादी से पहले सेक्स के लिए तैयार हो रही हैं। इसके पीछे मुख्य कारण है 'प्रोटेक्शन'। आज कंडोम और गर्भनिरोधक गोलियों ने लोगों को आश्वस्त कर दिया है कि वो पूरी तरह सुरक्षित हैं।

सामाजिक दृष्टिकोण से यह अलार्मिंग सिचुवेशन है। अब यदि सरकार और स्वयं लोग नहीं जागे तो इसके बुरे प्रभाव संपूर्ण समाज में पड़ेंगे। सामाजिक विघटन होगा और आने वाले समय में सामाजिक संबंध खत्म होते जाएंगे। वेश्यावृत्ति, नशाखोरी और अपराध बढ़ता चला जाएगा।

लखनऊ विश्वविद्यालय के विमेंस स्टडीज के लेक्चरर डा. अमित कुमार पाण्डेय का कहना है कि इसका एक कारण बेरोजगारी तो दूसरा लड़कियों में स्टेटस मेनटेन करने की चाह। बेरोजगारी के कारण जहां युवा वर्ग सिर्फ उसी दिशा में देखता है जहां पैसा मिले। और यदि 20 से 30 हजार रुपए महीने का लालच हो तो आकर्षण और भी बढ़ जाता है।

इसका फायदा ही ऐसे संगठन उठाते हैं। दूसरा कारण है लड़कियों में टेटस मेनटेन करने की ललक। अपने दोस्तों के बीच स्टेटस मेनटेन करने के चक्कर में भी कई बार लड़कियां धोखा खा जाती हैं और इन क्लबों के चक्कर में पड़ जाती हैं।